ISSN-2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्याएँ व समाधान

(विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता)

** प्रा. प्रतिक्षा शिवाजी तनपुरे,*

**सहायक प्राध्यापक , हिंदी विभाग, न्यू आर्ट्स ,कॉमर्स ॲण्ड सायन्स कॉलेज पारनेर, जिला. अहिल्यानगर, पिन 414302*

आधुनिक युग में अनुवाद के महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुन : कथन से लेकर आज के ट्रांसलेशन तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में स्वांत : सुखाय माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। बीसवीं शताब्दी के अवसान और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिंतन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों । भारत में अनुवाद की परंपरा पुरानी है। किंतु अनुवाद को जो महत्व 21वीं सदी के उत्तरार्ध में प्राप्त हुआ वह पहले नहीं हुआ था। हमारे देश में अनुवाद का महत्व प्राचीन काल से स्वीकृत है ।प्रो. जी. गोपीनाथन ने ठीक दी लक्ष्य किया था कि " अनुवाद आज की व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है आज के सिमटते हुए संसार में संप्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है ।''1

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और समृद्ध बना सकते हैं । अनुवाद आधुनिक ज्ञान - विनिमय की अनिवार्य प्रक्रिया है। भाषाओं के पार अर्थ, अनुभूति और संवेदना ले जाने का कार्य जितना आवश्यक है, उतना ही चुनौती पूर्ण भी। विशेषत: काव्यानुवाद जहाँ भाषा केवल सूचना वहन नहीं करती, बल्कि रुपात्मक सौंदर्य, सांस्कृतिक संकेत ,ध्वन्यात्मक संगीत ,अंतर्ध्वनियों और बहुस्तरीय अर्थों को भी साथ लिए होती है ।यह अनुवादक के लिए अत्यंत जटिल कार्य बन जाता है।

भारतीय भाषाओं में काव्यानुवाद का प्रश्न तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद अध्ययन तथा बहुभाषिक साहित्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। " गद्य साहित्य के अनुवाद की

ISSN-2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS
Original Research Article

अपेक्षा काव्यानुवाद की प्रक्रिया कई अर्थों में भिन्न होती है। अनुवादक तथा सर्वव्यापकता की आकांक्षा लिए कविता का अनुवाद करना चाहता है। गद्य साहित्य के अनुवाद की अपेक्षा वह अधिक स्वतंत्रता तथा छूट लेता है। संपूर्ण कविता को लक्ष्य भाषा में उतरने के लिए भाषिक स्तर का विचलन भी उसे मान्य होता है। परंतु कविता का सटीक अनुवाद करने का आनंद तथा श्रेय उसे शायद ही मिलता है। यह अनुवादक का दोष नहीं बल्कि कविता की सशक्तता है। ''2 कवि जब कविता लिखता है तब उसके काव्य लेखन में बहुत कुछ छूट जाता है। इस तरह काव्यानुवाद में भी बहुत कुछ छूट जाता है। फिर भी हम कविता की ओर आकर्षित होते हैं तथा काव्य अनुवाद करते हैं।

मराठी के साहित्यकार मामा वरेकर कहा हैं कि , " लेखक होना आसान है, किंतु अनुवादक होना अत्यंत कठिन है ।''3 साहित्यकार को एक भाषा आने से भी वह साहित्य लिख सकता है ,किंतु अनुवादक को दो भाषा का समांतर ज्ञान होना चाहिए। तभी वह अनुवाद का कार्य कर सकता है ।काव्यानुवाद करते समय अनुवाद को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य बन जाता है, क्योंकि अनुवादक को अनुवाद करने के लिए जिस मूल भाषा को चुनना पड़ता है ,उस भाषा को स्रोत भाषा कहा जाता है और अनुवादक जी चुनी हुई मूल भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद करता है, उसको लक्ष्य भाषा कहा जाता है। अनुवाद की प्रक्रिया को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में पूरा करने के लिए डॉ .भोलानाथ तिवारी द्वारा अनुवाद प्रक्रिया के पाँच सोपान बताए हैं, पाठ- पठन, पाठ विश्लेषण ,भाषांतरण ,समायोजन, मूल से तुलना आदि ।इन्हीं सोपानों के कारण ही अनुवादक मूल कृति का सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यता आदि दृष्टियों का अनुदित पाठ में अनुवाद को युक्त हो जाता है ।इस संबंध में कृष्ण कुमार गोस्वामी लिखते हैं कि , " सृजनात्मक साहित्य में विषयवस्तु (क्या)और शैली (कैसे) दोनों पर दृष्टि रहती है ।इसमें संदेह और शैली दोनों का विशेष कर शैली का अधिक महत्व होता है। इसमें संदेह संकल्पनात्मक अर्थ की अपेक्षा भावात्मक अर्थ का विशेष योगदान रहता है। इसमें भाषा और सूक्ष्म अर्थो पर लेखक का अधिकार रहता है। इसीलिए कविता के अनुवाद में सुर -ताल नाद सौंदर्य संरचनात्मक वैशिष्ट्य शब्द संस्कार और कविता का प्रतिकन आदि तत्व निर्मित हो जाते हैं।''4

इस संदर्भ में मराठी के सुप्रसिद्ध कवि विंदा करंदीकर की कविता का अत्यंत उल्लेखनीय है ।विंदा की कविता गहन दार्शनिक प्रश्नों ,मानवीय संवेदनाओं ,आत्मअन्वेषण जीवन दृष्टि और प्रयोगधर्मिता से निर्मित है। उनकी कविता में जिस प्रकार की वैचारिक जटिलता, प्रतीक - व्यवस्था और भाषिक लय मौजूद है। वह काव्य अनुवाद को एक विशिष्ट चुनौती प्रदान करती है। विंदा करंदीकर की कविता एक और मराठी की मानक भाषा में लिखी गई है। लेकिन उसमें खास कोकण की गंध है। रोजमर्रा के व्यावहारिक शब्दों की प्रचुरता है ।शब्दों के विशिष्ट सानिध्य से जो अर्थ ,ध्वनियाँ, वक्रताएँ ,सूचकताएँ व्यक्त की जाती है। वह सब किसी भी दूसरी भाषा में संक्रांत करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। कुछ कविताएँ है जो केवल मराठी में ही पढ़ी जा सकती है ।जैसे – " उगवलीस त कर्दळीतूनी / तरी निघालिस वर्दळवेडी / कशी पसरतिस आकाशावर / ओठामधली कडवट गोडी । ''5

उपर्युक्त पंक्तियों का अनुवाद करते समय यह समस्या आती है कि, कर्दळ कोंकण का खास कदलि जाति का पौधा है जिसमें

ISSN-2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS
Original Research Article

रंग – बिरंगे फूल खिलते है । फिर उसके साथ शब्द आया है वर्दळवेडी फिर पूरी कविता में खास कोकण का वातावरण है चित्रमय शब्द और केवल आठ पंक्तियों में ही एक पूरी जीवन कथा ।

विंदा ने अंग्रेजी पढ़ाया । अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया है ।अंग्रेजी कविता के प्रभाव से अपनी कविता में भी बहुत परिवर्तन होते अनुभव किया ।उनकी कविता का विशिष्ट यह है ,कि कभी अपनी जमीन से जुड़ा रहा। कविता का खाद -पानी अपनी मिट्टी से पता रहा । विंदा की कविता मराठी की देशीय भाषा से इतनी एकमेव है कि भारतीयेतर भाषाओं की बात छोड़ दे भारतीय भाषाओं में भी उसका अनुवाद बहुत परिश्रम साध्य है। विंदा की अधिकांश कविता का परिवेश उनका गाँव, तहसील ,जिला, नगर, मुंबई जैसा महानगर है ,और संवेदना एवं अनुभव का रूप भी देशी हैं । 'उन हिवाळ्यातील शिरशिरताना' कविता में 'भळभूलके' 'हिरमुसते' जैसे शब्द जो अकेले भी एक बिंब उत्पन्न करते हैं। अनुवादक को चुनौती देते हैं। इस तरह 'फितूर जाहले तुजला अंबर' में पहले ही पंक्ति 'तुडूंब भरलीस मातृत्वाने' गर्भवती स्त्री का जो विलक्षण शक्तिशाली बिंब खड़ा करती है, उसे हिंदी में लाना लगभग असंभव है ।कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को कविता के मूलभाव को ध्यान में रखकर ही अनुवाद करना पड़ता हैं, क्योंकि कभी-कभी अनुवादक शब्दानुवाद करता है, तो कविता का मूलभाव बिगड़ने की संभावनाएँ अधिक बन जाती है। प्रत्येक भाषा की भौगोलिक विशेषताएँ होती है। उसे भौगोलिक विशेषताओं के कारण ही उसे भाषा की सांस्कृतिक पहचान बनी हुई होती है ।इसीलिए ग्रामीण साहित्य के शब्द भंडार का अनुवाद करना बहुत मुश्किल काम होता है ।इसी तरह विंदा की 'घेता' कविता- "देणाऱ्याने देत जावे / घेणाऱ्याने घेत जावे / घेता घेता घेणाऱ्याने / देणाऱ्याचे हात घ्यावेत ''6इन पंक्तियों को मैं जब सुनती थी ,तब उनका अर्थ यही लेती थी, देने वाला जब तक दे रहा है। तब तक ले लो। जब उसका देना खत्म हो जाएगा ।तब उसके हाथ भी तोड़ कर ले लो अर्थात तब मैं विंदा की यह संपूर्ण कविता नहीं पढ़ी थी। लेकिन आज मैं दूसरों को यह उदाहरण बताती हूँ और अपनी मूर्खता पर हँसती हूँ ।कविता का विश्लेषण करते हुए अनुवादक यह समझ जाता है की मूल में कौन से बिंब, प्रतीक, अलंकार और छंद प्रयुक्त किए गए हैं ।इसलिए अनुवाद करते समय कविता का पाठ विश्लेषण महत्वपूर्ण होता है।

इस प्रकार से प्रस्तुत शोध आलेख में मैं हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्या वह समाधान(विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता) इस विषय पर उन समस्याओं को दिखाने की कोशिश की है। जो काव्यानुवाद करते समय उत्पन्न होती है ।अंत : हम कह सकते हैं कि, काव्यानुवाद वास्तव में एक बहुत ही कठिन कार्य है। इस संबंध में डॉ .सुरेश सिंहल लिखतें हैं कि, " काव्यानुवाद करना वास्तव में दो धारी तलवार पर चलने जैसा है ,क्योंकि जहाँ अनुवादक को इन विशेषताओं के काव्यात्मक सौंदर्य की रक्षा करनी होती है ।वहीं ये अनुवाद में कठिनाई भी उत्पन्न करती हैं। यह विशेषताएँ जितनी अधिक होगी अनुवाद ही कठिन होगा काव्य भाषा की यह विशेषताएँ ही अनुवादक के लिए वास्तविक चुनौती बनकर सामने आता है। अनुवादक को इन चुनौतियों का सामना करते हुए ही काव्यानुवाद करना पड़ता है। कविता में अत्यधिक जटिल भाषिक प्रयोग के कारण ही

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवादक को एक और काव्यानुवाद को हू- ब- हू कर सकते का दोष भी अपने सिर पर लेना पड़ता है। ''7

संदर्भ संकेत सूची :

1. *अनुवाद विज्ञान व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष, डॉ वन्दना राणा , पृ. क्र. 2*
2. *अनुवाद : समस्याएँ और संदर्भ, सं. प्रा बलवंत जेऊरकर पृ. क्र. 208*
3. *गोस्वामी कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका पृ. क्र. 09*
4. *वहीं. पृ. क्र. 275*
5. *विंदा करंदीकर , धृपद पृ. क्र. 34*
6. *वहीं, पृ . क्र. 119*
7. *डॉ .सुरेश सिंहल, अनुवाद : संवेदना और सरोकार पृ. क्र. 131*

Cite This Article:

प्रा. तनपुरे प्र. शि. (2025) *हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्याएँ व समाधान (विशेष संदर्भ विंदा करंदीकर की कविता)*

In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal: Vol. XIV (Number VI, pp. 223–226).

Doi: *https://doi.org/10.5281/zenodo.18008194*